इकाई 1

मानव भूगोल की प्रकृति और क्षेत्र

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
अपेक्षित अध्ययन परिणाम
1.2 परिभाषा
1.3 मानव भूगोल का विकास
1.3.1 जगद्विवरण/सृष्टिवर्णन और खोज काल
1.3.2 आधुनिक काल
1.3.3 उत्तर आधुनिक काल
1.4 मानव भूगोल की प्रकृति और परिप्रेक्ष्य
1.5 मानव भूगोल के क्षेत्र और शाखाएँ
1.6 मानव भूगोल की प्रासंगिकता
1.7 सारांश
1.8 अंत में कुछ प्रश्न
1.9 उत्तर
1.10 सन्दर्भ और अन्य पाठ्य सामग्री

1.1 प्रस्तावना

आपने विद्यालय स्तर पर भूगोल का अध्ययन किया है और आप में से कुछ ने उच्च माध्यमिक स्तर पर भी मानव भूगोल का अध्ययन किया होगा। यह इकाई मानव भूगोल की प्रकृति, परिप्रेक्ष्य और क्षेत्र को ज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा के रूप में समझने में आपकी सहायता करेगी। इसमें मानव भूगोल की प्रासंगिकता का भी वर्णन है। ज्ञान स्थिर नहीं होता है। यह समय के साथ बदलता है। इसलिए समय के साथ मानव भूगोल के क्षेत्र में विकास को समझना आवश्यक है। जैसे-जैसे ज्ञान बढ़ता है, नए क्षेत्रों की खोज की जाती है और इस प्रकार नई शाखाएँ विकसित होती हैं और अग्रसर होती हैं। बेशक, इस प्रक्रिया में पुराने पीछे छूट जाते हैं या बाहर हो जाते हैं।

भूगोल के दो प्रमुख उप-विषय हैं - भौतिक और मानव भूगोल। मानव भूगोल पृथ्वी की सतह पर मानवीय गतिविधियों से सम्बन्धित है। जैसे घर, सड़क, नहर, मन्दिर, खेल का मैदान और क्रीड़ा स्थल या स्टेडियम, आदि। यह मानव गतिविधियों को व्यवस्थित करने में प्राकृतिक वातावरण की प्रतिक्रियाओं के रूप में बदलाव और अनुकूलन को समझने का भी प्रयास करता है। दूसरे शब्दों में, मानव भूगोल पृथ्वी की सतह पर विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों में मनुष्य और उनकी गतिविधियों को गढ़ने की प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। यह पृथ्वी की सतह पर मानव गतिविधियों की स्थिति और स्थानिक

सम्बन्धों के अध्ययन से भी सम्बन्धित है। मानव भूगोल की अनूठी विशेषताओं में से एक है अपने उपागम या दृष्टिकोण में स्वतंत्र रूप से नहीं बल्कि समग्र और एकीकृत तरीके से चीजों और परिघटनाओं का अध्ययन करना जिससे कि 'क्या (चीजें/परिघटनाएँ) कहाँ हैं' जैसे प्रश्नों का उत्तर खोजा जा सके और यह भी समझाया जा सके कि चीजें कैसे और क्यों ऐसी व्यवस्थित हैं जैसे वर्तमान में दिखती हैं'। मानव भूगोल का उद्देश्य न केवल विश्व का वर्णन करना है जैसा कि यह प्रतीत होता है, बल्कि यह भी समझना है कि विश्व का वर्तमान स्वरूप ऐसा क्यों है या विश्व का ऐसा स्वरूप कैसे बना है और वर्तमान विश्व को आकार देने में कौन सी प्रक्रियाएँ शामिल हैं। संक्षेप में, यह इन प्रश्नों का उत्तर देता है - कहाँ क्या है (क्या कहाँ स्थित है), या प्रतिरूप (भौगोलिक/स्थानिक वितरण), जो यह यहाँ पाया जाने लगा है, कैसे हुआ? (अस्तित्व की प्रक्रिया) और इसके लिए कौन से कारक जिम्मेदार हैं (कारणात्मक सम्बन्ध)।

अपेक्षित अध्ययन परिणाम

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप :

- ❖ मानव भूगोल को परिभाषित कर सकेंगे और भूगोल के एक प्रमुख उप-विषय या शाखा के रूप में मानव भूगोल के विकास से परिचित हो पायेंगे;
- ❖ मानव भूगोल की प्रकृति और कार्यक्षेत्र से परिचित हो पायेंगे; और
- ❖ सामान्य रूप से मानव भूगोल और विशेष रूप से इसकी उप-शाखाओं के अध्ययन के लिए प्रयुक्त विभिन्न दृष्टिकोणों को समझ पायेंगे और साथ ही ज्ञान के क्षेत्र में मानव भूगोल की प्रासंगिकता को समझा सकेंगे।

1.2 परिभाषा

मानव भूगोल का शब्दकोश मानव भूगोल को इस प्रकार से परिभाषित करता है - "मानव भूगोल, भूगोल विषय का एक भाग है जो मानव गतिविधि के स्थानिक विभेदीकरण (spatial differentiation) और व्यवस्थापन और भौतिक वातावरण के साथ इसके अंतर्सम्बन्धों से सम्बन्धित है" (जॉन्स्टन, आदि, 2009, पृष्ठ 350)। यह भूगोल का एक प्रमुख क्षेत्र उन तरीकों या प्रक्रियाओं से सम्बन्धित है जो स्थान (place and space) और पर्यावरण मानवीय गतिविधियों के आधार और परिणाम दोनों हैं (जॉन्स्टन, आदि, 2009, पृष्ठ 350)। ऑक्सफोर्ड शब्दकोष के अनुसार "मानव भूगोल, भूगोल की शाखा है जो कि कैसे मानव गतिविधि पृथ्वी की सतह को प्रभावित करती है या पृथ्वी की सतह से प्रभावित होती है" आदि जैसे प्रश्नों के अध्ययन से सम्बन्धित है।

हन्टिंगटन ने सन 1922 ई. में अपनी किताब "मानव भूगोल के सिद्धान्त (Principles of Human Geography)" में (भौतिक पृष्ठभूमि भागवार पूरा करने के पश्चात्) मुख्य रूप से प्राकृतिक पहलुओं के साथ मानवीय पहलुओं के सम्बन्धों को देखा। उन्होंने मानव भूगोल को "भौगोलिक पर्यावरण का मानव गतिविधियों के साथ सम्बन्ध का अध्ययन" के रूप में परिभाषित किया है। विडाल डि ला ब्लाश अपनी किताब "मानव भूगोल के सिद्धान्त (Principles of Human Geography)" में कहते हैं कि मानव भूगोल पृथ्वी और मनुष्य के बीच के अंतर-सम्बन्धों की एक नई अवधारणा प्रदान करता है - एक अवधारणा जो कि हमारी पृथ्वी को नियन्त्रित करने वाले भौतिक नियमों के एक अधिक संश्लिष्ट ज्ञान और इसमें रहने वाले जीवों के बीच सम्बन्धों से उत्पन्न होता है।

एन्थ्रोपोज्योग्राफी नामक किताब के लेखक और आधुनिक मानव भूगोल के जनक फ्रेडरिक रेटजेल ने मानव भूगोल को ''मानव समाज और पृथ्वी की सतह के बीच सम्बन्ध का संश्लिष्ट (synthetic) अध्ययन'' के रूप में परिभाषित किया है। तत्पश्चात् एलेन चर्चिल सेम्पल ने मानव भूगोल को ''सदैव क्रियाशील मनुष्य और अस्थिर पृथ्वी के बीच बदलते सम्बन्धों का अध्ययन'' के रूप में परिभाषित किया। अल्बर्ट डिमांजों ने इसे ''मानव समूहों और समाजों का भौतिक वातावरण के साथ सम्बन्धों का अध्ययन के रूप में परिभाषित किया।''

ऊपर दिए परिभाषाओं के अनुसार, मानव भूगोल मानव और मानव गतिविधियों का भौतिक पर्यावरण के साथ सम्बन्ध का स्थानिक अध्ययन है। इसका अर्थ है विभिन्न भौतिक परिस्थितियों में मानव द्वारा सक्रिय और साथ ही निष्क्रिय घटक के रूप में बनाए गए परिदृश्य का स्थानिक प्रतिरूप। 20वीं शताब्दी के शुरुआती भागों में भूगोलवेत्ताओं की राय थी कि भौतिक वातावरण मानव जीवन और आजीविका, संस्कृति और समाज को प्रभावित और नियन्त्रित करता है। इस परिप्रेक्ष्य को **पर्यावरणीय निश्चयवाद या नियतिवाद** के रूप में जाना जाता था। हालाँकि उनके विचार को बाद में बहुत अनुयायी नहीं मिले। यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि भौतिक पर्यावरण और मनुष्यों के बीच अन्तर्सम्बन्ध लम्बे और जटिल रहे हैं।

सामाजिक विकास के प्रारंभिक दौर में भौतिक परिस्थितियों से मानव जीवन काफी प्रभावित हुआ था। हालाँकि जैसे ही मानव ने उपकरण, तकनीक और संस्थान विकसित किए, उन्होंने भौतिक वातावरण को संशोधित किया और पृथ्वी के स्वरूप पर भारी बदलाव लाए। मानव निरन्तर सक्रिय है और इसी प्रकार प्रकृति भी अपनी विभिन्न प्रक्रियाओं के माध्यम से सक्रिय है। इस सतत् प्रक्रिया में, भौतिक वातावरण अवरोधों के साथ अवसर भी प्रदान करता है और मनुष्य प्रौद्योगिकी के साथ परिस्थितियों को संशोधित करता है या उसे अपनाता है। उदाहरण के लिए, मानव शहरी क्षेत्रों में एयर कंडीशनर जैसे मौसम (तापमान) नियंत्रण तंत्र का उपयोग करता है और वाहनों को चलाने के लिए या बिजली उत्पादन के लिए जीवाश्म ईंधन का उपयोग करता है, जिसके प्रतिकूल परिणाम हो सकते हैं। इसलिए, हार्टशोर्न द्वारा दिए गए भूगोल की परिभाषा को देखते हुए मानव भूगोल को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है: ''मानव भूगोल सदैव परिवर्तनशील पृथ्वी की सतह और उसके पर्यावरण पर सक्रिय मानव और उनकी गतिविधियों/संगठनों के परिवर्तनशील वास्तविकताओं की सटीक, व्यवस्थित, तर्कसंगत और संश्लेषित विवरण और व्याख्या प्रदान करने से सम्बन्धित है।''

आप इस खण्ड की इकाई 3 और 4 में मानव भूगोल की सभी परिभाषाओं में परिलक्षित मानव-पर्यावरण सम्बन्धों का अध्ययन करेंगे।

बोध प्रश्न 1

मानव भूगोल क्या है?

1.3 मानव भूगोल का विकास

अनादि काल से विभिन्न रूपों में हमेशा मानव-पर्यावरण की परस्पर अन्तःक्रिया का उल्लेख या अभिव्यक्ति होती रही है। यह अभी भी अत्यन्त आदिम से लेकर एक अति परिष्कृत रूप में जारी है। लिखित अभिलेख या रिकॉर्ड के रूप में थेल्स (624 ईसा पूर्व

से 547 ईसा पूर्व) और एनिक्सिमेंडर (611 ईसा पूर्व से 546 ईसा पूर्व) ने 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में मनुष्यों पर जलवायु और वनस्पतियों के प्रभावों का उल्लेख किया था। इसी तरह, हिप्पोक्रेट्स (460 ईसा पूर्व से 377 ईसा पूर्व) ने शारीरिक या भौतिक समरुपताओं के आधार पर दो महाद्वीपों के मनुष्यों के विकास की तुलना का काम किया। अरस्तू ने कहा कि एशिया के लोग बहादुर हैं जबकि ठंडे क्षेत्रों के लोग नहीं हैं। यह कई अन्य लोगों द्वारा दर्ज किया गया था जैसे हेरोडोटस (484 ईसा पूर्व-425 ईसा पूर्व), स्ट्रैबो (63 ईसा पूर्व से 25 ईस्वी), आदि। भारत में, लिखित विवरण की शुरुआत का कनिष्क (127 ईस्वीं) और हर्षवर्धन (590-647 ईस्वीं) के समय से पता लगता है। अरबी विद्वानों ने स्थानों और लोगों के अपने विवरणों में मानव-पर्यावरण सम्बन्धों का भी उल्लेख किया है। मानव अपनी सामाजिक विकास की प्रक्रिया जैसे भोजन के लिए शिकार एवं खाना एकत्रित करने वालों से लेकर पशुचारण करने वाले तथा स्थानबद्ध कृषि और शहरी-औद्योगिक समाज, सभी चरणों में अन्य स्थानों और लोगों के बारे में हमेशा जिज्ञासु रहा है। जब लोग यात्रा करते थे और व्यापार करते थे तो वे कुछ बही-खाते और दस्तावेज या कागजात रखते थे। जब राजा या शासक कर एकत्र करते थे, तो राज्य द्वारा कुछ प्रकार के मानचित्र तैयार किए जाते थे। समुदाय और लोगों के समूह बदलते मौसम की स्थिति और उनके निकटवर्ती इलाकों के बारे में गीत गाते थे। इन सभी ने इस समझदारी से अवगत कराया कि मानव अपने आस-पास के परिवेश-भौतिक और मानव-दोनों से ही बना है।

हालाँकि मानव भूगोल विषय का औपचारिक विकास खोज (explorations) के समय से माना जा सकता है, जब लोगों और स्थानों का उचित भौगोलिक प्रलेखन अधिक व्यवस्थित बन गया, जो अधिक वैज्ञानिक मानचित्रों और भौगोलिक संस्थाओं द्वारा समर्थित है। मानव भूगोल का विकास आगे वर्णित तीन मुख्य चरणों में देखा जा सकता हैः क) जगद्विवरण/सृष्टिवर्णन और खोज काल, ख) आधुनिक काल और ग) उत्तर आधुनिक काल।

1.3.1 जगद्विवरण/सृष्टिवर्णन और खोज काल

15 वीं शताब्दी से 18 वीं शताब्दी के मध्य तक की अवधि के दौरान भौगोलिक ज्ञान की मात्रा और गुणवत्ता में महत्त्वपूर्ण विस्तार हुआ है। इनमें से अधिकांश का आविर्भाव खोज की यात्राओं और अज्ञात दुनिया के विभिन्न हिस्सों के वैज्ञानिक अभियानों या खोज यात्राओं के कारण हुआ। इस अवस्था पर यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इस तरह के अन्वेषण या खोज अधिकतर पश्चिमी यूरोपीय देशों द्वारा किए गए थे क्योंकि वे दुनिया के बारे में अपने पड़ोसी और तटों से आगे बहुत कम जानते थे। चीनीयों ने जमीन और पानी दोनों पर इस तरह के अन्वेषण या खोज बहुत पहले किए थे। यूनानियों, अरबों और फारसियों ने दूर-दूर तक यात्रा की और अभिलेखों में संग्रह किया। भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी किनारे और प्रायद्वीपीय भारत के पूर्वी तट का मध्य पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया से सम्पर्क था। किन्तु यूरोपीय अभियानों ने सर्वेक्षण, प्रक्षेपणों इत्यादि के साथ कार्टोग्राफी और मानचित्र-निर्माण में नए विकास किए। नक्शों की अनिवार्यता खोजी जलयात्राओं, अभियानों, व्यापार के लिए संसाधनों के दोहन और शक्ति के विस्तार के लिए थी। जेम्स रेन्नेल द्वारा अग्रणी एटलस 'बंगाल का एटलस (1799)' इस अवधि का एक उत्पाद रहा है। इस अवधि के दौरान कार्लोस लिनिअस, लैमार्क और काउंट बफॉन जैसे लोगों द्वारा यात्रियों, खोजकर्ताओं और नाविकों द्वारा प्रलेखित विवरणों के

आधार पर और स्वयं के अवलोकन पर वैज्ञानिक तरीके से पौधों और जानवरों का वर्गीकरण का आविर्भाव हुआ। उस समय क्रमविकास का सिद्धान्त भी अंकुरित हुआ (1859)। दुनिया भर में भूमि और लोगों के बारे में बढ़ते अनावरण और ज्ञान के साथ दुनिया के विभिन्न भागों/क्षेत्रों पर मानव व्यवहार पर पर्यावरणीय प्रभाव भी देखा गया और प्रलेखित किया गया (1566 में जीन बोडिन का काम, 1625 में नाथनेल कार्पेंटर का काम और चार्ल्स लुइस मोंटेस्क का 1721 और 1750 में काम)। जनसंख्या और जनसांख्यिकी पर भौगोलिक लेखन का भी प्रयास किया गया (जे.पी. सुसमिथ, 1741, लैम्बर्ट क्वेलेट, 1848, और एडमंड हैली, 1693)। यह वह अवधि है जब भूगोल जगद्विवरण या सृष्टिवर्णन शास्त्र से वैज्ञानिक भूगोल में परिवर्तन हुआ। बर्नहार्ड वेरेनियस पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भूगोल के दो प्रमुख उप-क्षेत्रों - क्षेत्रीय और सामान्य भूगोल की पहचान की। उनकी राय में, भूगोल को प्राकृतिक और मानवीय गतिविधि - दोनों का अध्ययन करना चाहिए। किन्तु लेखन अधिक सृष्टिवर्णनमय था और 18 वीं शताब्दी के अंत में मानव भूगोल का व्यवस्थित या वैज्ञानिक विकास शुरू हुआ।

1.3.2 आधुनिक काल

18 वीं शताब्दी में अन्वेषणों या खोजों और जलयात्राओं से एकत्रित विशाल ज्ञान के आधार पर भूगोल में वैज्ञानिक लेखन की शुरुआत हुई। इमैनुएल कांट ने भूगोल को ज्ञान के वर्गीकरण में वैज्ञानिक विषय के रूप में रखने के लिए दार्शनिक आधार प्रदान किया (होल्ट-जेनसेन, पृष्ठ 41)। इसके बाद, अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट और कार्ल रिटर ने ज्ञान की वैज्ञानिक शाखा के रूप में भूगोल की नींव रखी। हम्बोल्ट और रिटर की अवधि को आधुनिक भूगोल के शास्त्रीय काल के रूप में जाना जाता है। धीरे-धीरे विषय क्षेत्र में उनके योगदान के कारण भूगोल विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाने लगा और कार्ल रिटर को 1820 में बर्लिन में भूगोल के पहले प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया था। धीरे-धीरे यूरोप के कई विश्वविद्यालयों में भूगोल की पीठ खोली गईं। इस तरह के एक पीठ आचार्य (प्रोफेसर) 1873 में नियुक्त पॉल विडाल डि ला ब्लाश थे।

प्रारम्भिक भूगोल पर भौतिक भूगोल हावी था और मानव भूगोल का विकास धीमा था। हालाँकि यह मानव और उनके भौतिक पर्यावरण के बीच अन्तर्सम्बन्ध का वर्णन करते हुए *कोस्मोस और एर्डकून्डे* के रूप में हम्बोल्ट और रिटर की स्मारकीय पहल के बाद आगे बढ़ गया। पहले भूगोल क्षेत्रों की भौतिक विशेषताओं और संसाधनों के विवरण और वर्णन से सम्बन्धित था। बाद में सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक पहलुओं को भी ध्यान में रखा गया। औपनिवेशिक विस्तार वाली अवधि के दौरान भूगोल को अच्छा समर्थन मिला, जहाँ संसाधनों और मानव के सन्दर्भ में नए क्षेत्रों का भौगोलिक ज्ञान बहुत उपयोगी माना जाता था।

1882 में एंथ्रोपोज्योग्राफी के रूप में फ्रेडरिक रेटजेल के कार्य मानव भूगोल के लिए एक मील का पत्थर बन गए, जो रेटजेल को शिक्षा में व्यापक प्रचार और स्वीकार्यता के साथ आधुनिक मानव भूगोल के पिता या संस्थापक के रूप में पहचान देता है। एंथ्रोपोज्योग्राफी मानव समाज और भौतिक पर्यावरण और उनके सम्बन्धों पर अध्ययन का संश्लेषण है। रेटजेल ने 1897 में अपनी पुस्तक राजनीतिक भूगोल (पॉलिटिकल ज्योग्राफी) द्वारा मानव भूगोल में भी योगदान दिया, जो पर्यावरणीय निश्चयवाद, राष्ट्रवाद और नस्लवाद को दर्शाता है। यह **सामाजिक डार्विनवाद (Social Darwinism)** से बहुत अधिक प्रभावित था, जो योग्यतम पर उत्तरजीविता या योग्यता के अस्तित्व

हरबर्ट स्पेंसर द्वारा 19वीं शताब्दी के अंत में **डार्विन के क्रमविकास के सिद्धान्त** (Darwinian Theory of Evoluation) को लागू करते हुए **सामाजिक डार्विनवाद** शब्द दिया गया था, जो कहता है कि जैसा कि समय के साथ पौधे और जानवर सरल से जटिल होते गए हैं और अपने बल पर जीवित रहे, मानव समाज भी उसी तरह एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा कर विकसित हुए हैं। यह 'योग्यतम के अस्तित्व (survival of fittest)' के विचार का समर्थन करता है, जो अन्य सभी समाजों के शीर्ष पर श्वेत यूरोपीय लोगों को दर्शाता है, जो अपनी शक्ति और आदेश/नियम को अन्य सभी पर सही ठहराते हैं। **निश्चयवाद** या **नियतिवाद (Determinism)** एक विचार है जिसके तहत यह माना जाता है कि मानव गतिविधियों और प्रतिक्रियाओं को प्राकृतिक वातावरण द्वारा पूरी तरह से विनियमित किया जाता है। **सम्भववाद (Possibilism)** नियतिवाद का उल्टा है, जो इस बात की वकालत करता है कि प्राकृतिक वातावरण द्वारा उत्पन्न बाधाओं के बीच मनुष्यों के पास कई अवसर हैं। **रूको और जाओ निश्चयवाद** या **नियतिवाद (Stop and Go Determinsm)** या **नव-नियतिवाद** कहता है कि मनुष्य को अपने नियंत्रण के साथ प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए अवसरों को बुद्धिमानी से देखना, रूकना और आगे बढ़ना चाहिए, लेकिन प्रकृति के खिलाफ नहीं।

survival of fittest) पर नस्लवाद और साम्राज्यवाद को सही ठहराता है। इसे रेटजेल की शिष्या, सुश्री एलेन चर्चिल सेम्पल द्वारा आगे बढ़ाया गया, जिसका जोर मानव और उसके कार्यकलापों को बनाने में पर्यावरण के प्रभाव पर बहुत अधिक था। **पर्यावरणीय निश्चयवाद (Environmental Determinism)** का पक्ष लेते हुए उनका विचार था कि पर्यावरण के साथ सम्बन्ध में मानव की भूमिका निष्क्रिय थी। हंटिंगटन ने पर्यावरणीय नियतिवाद पर लिखी अपनी पुस्तक 'द प्रिंसिपल ऑफ ह्यूमन ज्योग्राफी' के माध्यम से मानव भूगोल में योगदान दिया, जो मुख्य रूप से जलवायु को समाज, संस्कृति और इतिहास को आकार देने के कारक के रूप में उजागर करता है। पर्यावरणीय निश्चयवाद के विचार की प्रतिक्रिया के रूप में पॉल विडाल डि लाब्लाश ने अपनी पुस्तक 'प्रिंसिपल्स डी जियोग्रॉफी ह्यूमेन' या मानव भूगोल के सिद्धान्त में मानव-पर्यावरण सम्बन्धों में मानव की सक्रिय भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उभारा। ब्लाश ने **सम्भववाद (Possibilism)** की शुरुआत की, जहाँ मानव प्रकृति द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर अपने पर्यावरण को संशोधित करके अपने स्वयं के अवसरों का निर्माण करता है। इसके बाद, ग्रिफिथ टेलर ने **रूको और जाओ निश्चयवाद (Stop and Go Determinism)** या **नव-निश्चयवाद (Neo Determinism)** का विचार दिया, जो मनुष्यों को सक्रिय मानता तो था, लेकिन इसमें प्रकृति के साथ मिलकर आगे बढ़ने के दृष्टिकोण के साथ मानव कारकों को यातायात नियामक के रूप में माना जाता है, जो प्रकृति को प्रौद्योगिकी के माध्यम से लेकिन प्रकृति द्वारा निर्धारित सीमाओं के साथ संशोधित कर सकता है या प्रकृति की दिशा में सुरक्षित रूप से आगे बढ़ने के लिए अवसरों को तार्किक रूप से देखता है। कई अन्य प्रारम्भिक भूगोलवेत्ताओं ने ऊपर वर्णित तीन उपागमों या दृष्टिकोण से मानव भूगोल में योगदान दिया। इसके बाद के दशकों में क्षेत्रीय अवधारणा और क्षेत्रीय भूगोल का उदय हुआ, जिसने भौतिक/ पर्यावरणीय और मानवीय पहलुओं को एक साथ लेते हुए दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग स्तर पर एक व्यापक विवरण प्रस्तुत किया।

हालाँकि क्षेत्रीय भूगोल के ढाँचे की जल्द ही आलोचना की गई और भूगोल में वैज्ञानिक उपागम या दृष्टिकोण के लिए व्यापक सांख्यिकीय आँकड़ा और सांख्यिकीय उपकरणों के विकास की शुरुआत हुई और धीरे-धीरे इसमें निष्पक्षता, तर्कसंगतता और दृढ़ता लाया गया। वैज्ञानिक दृष्टिकोणों या उपागमों जैसे विभिन्न गतिविधियों की स्थिति और रिक्तियों के आधार पर कई मॉडल और सिद्धान्त बनाए गए जैसे वाल्टर क्रिस्टलर द्वारा केन्द्रीय स्थान सिद्धान्त (Central Place Theory), वाल्टर आइजार्ड, अल्फ्रेड वेबर और अगस्त लॉश्च द्वारा औद्योगिक स्थिति सिद्धान्त (Industrial Location Theories), एर्नेस्ट जी रेवेनस्टीन, एवरेट ली, विलबर्न जेलिंस्की, जी.के. जिप्फ और स्टॉफर द्वारा प्रव्रजन सिद्धान्त (Migration Theories), एडवर्ड उल्मैन द्वारा ट्रांसपोर्ट नेटवर्क मॉडल (Transport Network Model), जी.के. जिप्फ द्वारा शहरों का आकार और अन्तराल या रिक्तियाँ (Size and Spacing of Cities), टॉरस्टेन हैगरस्ट्रैंड द्वारा डिफ्यूजन थ्योरी (Diffusion Theory), और पीटर हैगेट और रिचर्ड जे चोर्ले द्वारा दिए गए अनेक प्रारूप, जिन्होंने भौगोलिक अध्ययनों में अति दृढ़ वैज्ञानिक तरीकों का पालन किया। इस प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध तक मानव भूगोल में कुछ उल्लेखनीय विकास हुए हैं। इसे मानव भूगोल के एक नए युग की शुरुआत के दौर के रूप में देखा जा सकता है, जो अपने विकास, विशेषज्ञता और उपागम या दृष्टिकोण के मामले में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आश्चर्यजनक रूप से तीव्र गति से आगे बढ़ा है।

1950 के दशक तक मानव भूगोल में नए विकास की गति धीमी थी। भूगोल मुख्य रूप

से क्षेत्र विभेदीकरण या क्षेत्रक्रम का अध्ययन (chorology या क्षेत्र विज्ञान) था। इस ओर पर्यावरणीय निश्चयवाद की प्रतिक्रिया में भूगोल का दूसरा उपागम या दृष्टिकोण 1950 के दशक में उभरना शुरू हुआ जिसे **मात्रात्मक क्रांति (Quantitative Revolution)** के रूप में जाना जाता है। इस अवधि में कुछ भूगोलवेत्ताओं ने भौगोलिक अनुसंधानों में कारणात्मक सम्बन्धों को समझाने और भविष्यवाणी करने के लिए सांख्यिकीय तकनीकों और गणितीय मॉडल के उपयोग को तेजी से बढ़ावा दिया क्योंकि इन क्षेत्रों की भूगोल विषय के अन्दर अत्यधिक कमी थी। आप मात्रात्मक क्रांति को भूगोल में कम्प्यूटर जैसी कम्प्यूटिंग मशीनों की बढ़ती मदद से सांख्यिकीय तकनीकों और गणितीय मॉडल के व्यापक उपयोग के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। इसने इस अवधि में मानव भूगोल की वैचारिक, पद्धतिगत और तकनीकी (कम्प्यूटिंग और ग्राफिक प्रौद्योगिकी का गहन उपयोग) प्रकृति और पहचान को बदल दिया। 1950 के दशक के उत्तरार्ध में मानव भूगोल में क्रांति लाने का पहला प्रयास कुछ मजबूत सैद्धान्तिक आधार के साथ हुआ। यह मजबूत स्थानिक आयामों - स्थान, वितरण, पदानुक्रम और परस्पर अन्तःक्रिया (interaction) के साथ सांख्यिकीय/गणितीय मॉडल का मिश्रण था। यहाँ परिघटनाओं के स्थानिक कारणात्मक सम्बन्धों के कारण परस्पर अन्तःक्रिया (interaction) अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थी। कारणात्मक सम्बन्ध और आगे मॉडलिंग के विश्लेषण में गणित और सांख्यिकी का दृढ़तम उपयोग 1950 के दशक से आज तक अकल्पनीय रूप से प्रगति कर रहा है। इस विकास क्रम में, तन्त्र उपागम (system approach) चीजों और परिघटनाओं को एक दूसरे से जुड़े तन्त्र में देखने के लिए पद्धतिगत विकास (बी जे एल बेरी) के रूप में उभरा जहाँ ये एक दूसरे से परस्पर जुड़े होते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

भूगोल धीरे-धीरे स्थानिक विज्ञान बन रहा था जिसे एफ.के. शैफर के मरणोपरांत प्रकाशित भूगोल में असाधारणता पर लेख के बाद बहस से प्रेरणा मिली थी। भूगोल ने धीरे-धीरे विशेष रूप से संश्लेषण और विश्लेषण के लिए गणितीय तर्क और सांख्यिकीय तकनीकों पर आधारित विज्ञान के दर्शन को मानव भूगोल में दृढ़ता से शामिल किया जिसे भूगोल में **प्रत्यक्षवाद (Positivism)** के रूप में भी जाना जाता है। इस अन्तर्जात या स्वस्थानी परिवर्तन ने दुनिया भर में पूरे भूगोल विषय में क्रांति ला दी और वास्तविक दुनिया की समस्या को सुलझाने वाली प्रकृति के साथ अति परिष्कृत स्थानिक सांख्यिकीय विश्लेषण भूगोल का एक प्रमुख हिस्सा बन गया। इसमें वैज्ञानिक उपागम या दृष्टिकोण के साथ अच्छी तरह से निर्मित अनुसंधान शामिल किया गया था जिसमें परिकल्पनाओं के परीक्षण का उपयोग करते हुए भौगोलिक अनुसंधान में कारणात्मक सम्बन्धों की व्याख्या करने की क्षमता थी।

मात्रात्मक क्रांति के फलने-फूलने के दौरान, अत्यधिक मात्रात्मकता और प्रत्यक्षवाद की प्रतिक्रिया के रूप में मानव भूगोल में भौगोलिक विचार की एक नई लहर अस्तित्व में आई। भौगोलिक विचार की यह लहर सामाजिक और कल्याणकारी भूगोल से सम्बन्धित है, विशेष रूप से मार्क्सवादी दृष्टिकोण पर आधारित कट्टरपंथी या आमूल परिवर्तनवादी भूगोल (Radical Geography) जिसे कभी-कभी मार्क्सवादी भूगोल कहा जाता है। नई उभरती हुई उप-शाखाएँ थीं व्यवहारिक भूगोल, सामाजिक और कल्याण भूगोल, मानवतावादी भूगोल और कट्टरपंथी या आमूल परिवर्तनवादी भूगोल। मात्रात्मक क्रान्ति और प्रत्यक्षवाद को समाज की गरीबी, भुखमरी, अभाव, कुपोषण और स्वास्थ्य, अपराध, आय वितरण और असमानता, शिक्षा में कमी आदि से सम्बन्धित समस्याओं से कम सम्बद्ध या वास्ता रखने वाला माना जाता था। इसका आविर्भाव सामाजिक अशांति से हुआ और इसने समानता और न्याय के अध्ययन की वकालत की। इसने लोगों की

भलाई पर ध्यान केन्द्रित किया और समाज में न्याय और समानता पैदा करने की दिशा में भौगोलिक अध्ययन के अन्य तरीकों को कम महत्त्व दिया। यह सिर्फ आर्थिक विकास के बजाय समग्र कल्याण पर केन्द्रित था। इस आंदोलन के प्रणेता डी.एम. स्मिथ (Human Geography: A Welfare Approach, 1977) और डेविड हार्वे (Social Justice and the City, 1973; The Limits to Capital, 1982) थे।

1.3.3 उत्तर आधुनिक काल

भूगोल के नए विषय सामग्री जैसे भू-राजनीति, विकास तथा अविकसितता (under-development), असमानता, सामाजिक न्याय, स्वास्थ्य, शिक्षा, लिंग, सबाल्टर्न, इत्यादि के साथ दुनिया भर में चल रहे सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों बारे में और अधिक सम्बद्धता दिखाते हुए 1980 के दशक के उत्तरार्ध से भौतिक वातावरण, सांस्कृतिक परिदृश्य, स्थान, स्थिति और पैमाने की मूल पृष्ठभूमि में मानव भूगोल ने विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी के दर्शन के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना शुरू कर दिया। मानव भूगोल की कई विशिष्ट शाखाएँ आईं और अभी भी मुख्य धड़-मानव भूगोल के अलग हिस्से के रूप में आ रही हैं। इस अवधि के दौरान मानव भूगोल में बाद के घटनाक्रम उत्तर आधुनिक भूगोल और उत्तर आधुनिकतावाद हैं जो आधुनिकता या पश्चिमी पूँजीवादी दृष्टिकोण के आलोचक के रूप में आधुनिक काल के बाद आते हैं। यह भव्य आख्यानों (grand narratives) या आधुनिक (पूंजीवादी) लेंस (चश्मे) से परे दुनिया को देखने के बारे में है। उत्तर आधुनिक भूगोल 1980 के दशक के उत्तरार्ध में शुरू हुआ, जो अनुसंधान में स्थान और स्थान के महत्त्व को पुनः प्रस्तुत करता है। यह बाद में माइकल डियर (1988), एडवर्ड सोजा (1989), डेविड हार्वे (1989) और अन्य द्वारा शुरू किया गया।

बोध प्रश्न 2

मानव भूगोल के विकास के चरणों का वर्णन कीजिए।

1.4 मानव भूगोल की प्रकृति और परिप्रेक्ष्य

प्रकृति

परिभाषा से आप मानव भूगोल और इसके अन्य पहलुओं के बारे में बहुत कुछ समझ गए हैं। मानव भूगोल की प्रकृति अंतर्विषयक है जहाँ यह पृथ्वी की सतह और इसके पर्यावरण पर भौतिक परिस्थिति या पर्यावरण के ऊपर मानव प्रतिक्रियाओं जैसे सामाजिक, सांस्कृतिक, जनसांख्यिकीय, आर्थिक, और राजनीतिक गतिविधियों के सन्दर्भ में स्थानिक व्यवस्थाओं का अध्ययन करता है। डिक्शनरी ऑफ ह्यूमन ज्योग्राफी का कहना है कि ''मानव भूगोल, भूगोल का एक प्रमुख क्षेत्र है और उन तरीकों या प्रक्रियाओं से सम्बन्धित है जिसमें स्थान (place and space) और पर्यावरण मानवीय गतिविधियों के आधार और परिणाम दोनों हैं (जॉन्स्टन, आदि, 2009, पृष्ठ 350)।

प्रकृति द्वारा प्रदान की गई सीमाओं और अवसरों के भीतर तकनीकी प्रगति के आधार पर मानव अपने परिवेश के संशोधन में लगातार सक्रिय रहता है। प्रकृति और मानव दोनों अपनी प्रकृति के अनुसार कार्य कर रहे हैं और संतुलन के लिए संतुलन बिन्दु स्थापित

कर रहे हैं जो समय और स्थान के सापेक्ष और परिवर्तनशील है। उदाहरण असंख्य हैं जैसे दुनिया भर में विभिन्न निवासियों द्वारा बदलती अनुकूलन और घर की संरचनाएँ। इसका अच्छा उदाहरण वर्तमान में दुनिया भर में भूकम्प की घटनाओं के कारण विशेषकर प्रशांत रिंग या वलय के साथ भूकम्प रोधी इमारती संरचनाएँ हैं। दक्षिण पूर्व और पूर्वी एशिया और मध्य पूर्व के कई देशों में समुद्र में रहने के लिए बसाव क्षेत्रों का विस्तार भी अच्छे उदाहरण हैं। अभी भी इस वैज्ञानिक युग में कई अलग-अलग सामाजिक और सांस्कृतिक प्रथाओं को जारी रखा गया है, जो प्रकृति द्वारा महत्त्वपूर्ण रूप से निर्देशित हैं। इसी प्रकार, मानव की आर्थिक गतिविधियाँ और उनकी स्थानिक व्यवस्थाएँ तेजी से तकनीकी विकास के बावजूद प्रकृति द्वारा नियंत्रित और निर्देशित होती हैं। पारस्परिक अन्तःक्रिया (interaction) एक-दूसरे के समायोजन से होती है। बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक परिदृश्य मानव भूगोल का केन्द्र रहे हैं, परन्तु बदलते भौतिक/पर्यावरणीय पृष्ठभूमि में दोनों के द्वारा किए गए कारण और परिणाम के रूप में रहे हैं। इस प्रकार मानव भूगोल की प्रकृति यह है कि यह दोनों - सक्रिय मानव और अस्थिर पृथ्वी सतह - की पारस्परिक क्रिया का अध्ययन करना है जहाँ भौतिक वातावरण में मानव के लिए अवसरों की सम्भावनाएँ प्रदान करने के साथ कई सीमाएँ हैं। और इसके जवाब में मानव प्राकृतिक वातावरण को संशोधित करता है और उस वातावरण में समायोजित होता है। यह सम्बन्ध भौतिक वातावरण और मानव प्रगति की बदलती प्रकृति के साथ बदलता रहता है।

परिप्रेक्ष्य

मानव भूगोल का प्रमुख परिप्रेक्ष्य या दृष्टिकोण चीजों और परिघटनाओं का स्थान के ऊपर क्षेत्र संयोजन (areal combinations) के रूप में समग्रता में अध्ययन करना है ताकि इसे एक संश्लेषित विषय के रूप में विकसित किया जा सके। जैसा कि इतिहास समय का आख्यान है, भूगोल स्थान और स्थिति (space and place) के सदैव परिवर्तनशील आयामों का वर्णन है। चूँकि ये एक-दूसरे से कारणात्मक और स्थानिक रूप से परस्पर जुड़े होते हैं, एक दूसरे के बीच स्थानिक सम्बन्धों का विश्लेषण करके पूर्ण वास्तविकता की पड़ताल करने की दिशा में मानव भूगोल चीजों और परिघटनाओं के कई आयामों को देखता है। उदाहरण के लिए, मनुष्य की कृषि गतिविधियाँ मुख्य रूप से स्थलाकृति, जलवायु परिस्थितियों, तकनीकी स्तर, जनशक्ति, सांस्कृतिक प्रथाओं और खान-पान, बाजार, ऋण सुविधा, आदि द्वारा अपना स्वरूप प्राप्त करती हैं। साथ ही परिदृश्य और पर्यावरण पर भी कृषि प्रभाव डालती है। कुछ उदाहरण उत्तराखंड के उधमपुर जिले में भूमि पुनर्ग्रहण, चम्बल क्षेत्र के बीहड़ों में भूमि पुनर्ग्रहण, स्थानान्तरी खेती, गंगानहर कमान क्षेत्र और लोगों और सरकारों द्वारा इस तरह की पहल पर्यावरण को प्रभावित करती है। तकनीकी नवाचार और आनुवंशिक रूप से संशोधित बीजों के विकास से हमारी आय में वृद्धि हो सकती है लेकिन वे प्रकृति पर गहरे धब्बे भी छोड़ते हैं।

मानव भूगोल इस प्रश्न से शुरू होता है - क्या कहाँ है '(किसी चीज की पृथ्वी पर स्थिति क्या है, जैसे आक्षांश और देशान्तर के रूप में स्थिति) या कहाँ क्या है (किसी विशेष स्थिति/स्थान पर क्या है), और यह पता लगाने का प्रयास करता है कि वे चीजें पृथ्वी के दिए गए स्थान पर क्यों स्थित हैं, और यह भी कि उनका ऐसा अस्तित्व क्यों और कैसे हैं या उनका वितरण प्रतिरूप क्यों ऐसा है जैसा वे हैं। यह न केवल क्या और कहाँ बल्कि इसमें शामिल प्रक्रियाओं की व्याख्या करते हुए और सभी सम्बद्ध

कारकों को सम्पूर्णता से सश्लेषित करते हुए यह भी बताता है कि वर्तमान में किस प्रकार चीजें विद्यमान हैं।

मानव भूगोल के परिप्रेक्ष्य को समझने के लिए अन्य विषयों से भूगोल के अंतर को जानना महत्वपूर्ण है जैसा कि यह अन्य विषयों के विपरीत चीजों या परिघटनाओं को समग्र रूप से देखता है। सारांश के रूप में, भूगोल दुनिया के अपने ज्ञान को परस्पर जुड़े हुए प्रणालियों में व्यवस्थित करने का प्रयास करता है, ताकि ज्ञान का कोई भी विशेष टुकड़ा सभी से सम्बन्धित हो सके" (अधिकारी, च. 10)।

बोध प्रश्न 3

मानव भूगोल की प्रकृति और परिप्रेक्ष्य क्या हैं?

1.5 मानव भूगोल के क्षेत्र और शाखाएँ

क्षेत्र

मानव भूगोल की परिधि ज्यादातर पृथ्वी की सतह पर गतिशीलता से बदल रहे विविध पर्यावरण और भौतिक स्थितियों की प्रतिक्रिया में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों से सम्बन्धित मानव गतिविधियों के आसपास केंद्रित है। मनुष्यों के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक आयामों के सभी पहलुओं की समझ विकसित करना सम्भव नहीं है, क्योंकि इनमें से हर एक बहुत बड़ा है और इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। मानव जीवन के आर्थिक पहलुओं में कृषि, पशुधन और सम्बद्ध गतिविधियाँ, उद्योग और सेवाएँ शामिल हैं। इसलिए मानव जीवन के सभी पहलुओं की बेहतर समझ के लिए हमें समय के साथ विकसित हुए मानव भूगोल के भीतर कई उप विषयों और शाखाओं पर एक दृष्टिपात की आवश्यकता है। इनमें से कई धूमिल हो गए हैं और कई नए अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में हो सकते हैं।

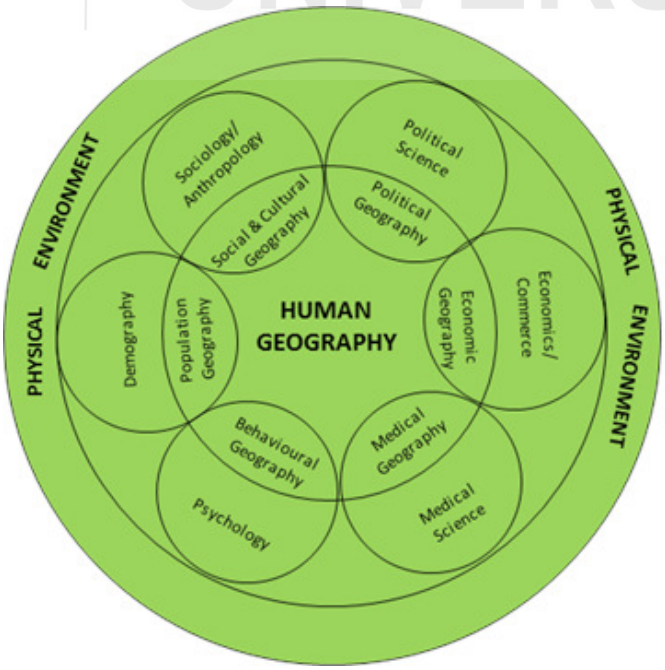

चार्ट 1: मानव भूगोल का क्षेत्र।

स्रोत: फेनमैन के आरेख (1919) के आधार पर बनाया गया।

आप उपरोक्त आरेख में देख सकते हैं कि मानव भूगोल अन्य विषयों (मानव विज्ञान, समाजशास्त्र/मानव शास्त्र, राजनीतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र/वाणिज्य, आयुर्विज्ञान, मनोविज्ञान और जनसांख्यिकी) से विषय वस्तु लेता है। और ये भौतिक वातावरण के घेरे में हैं। मानव और भौतिक पर्यावरणीय परिस्थितियों के विभिन्न संयोजन सूक्ष्म से स्थूल तक अलग-अलग पैमानों पर पृथ्वी की सतह पर प्रतिरुप और प्रक्रियाओं की समझ में मदद कर सकते हैं। भूगोल और इतिहास में अन्य विषयों के साथ अभिरुचि के क्षेत्रों का अतिव्यापी क्षेत्र है और उनसे उदारतापूर्वक विषयवस्तु, विषय, मुद्दे और अवधारणाएँ ली जाती हैं।

शाखाएँ

जैसा कि मानव भूगोल पृथ्वी की सतह पर विभिन्न वातावरणों में मानव को उसकी गतिविधियों के साथ आकार देने वाले प्रतिरूपों और प्रक्रियाओं के अध्ययन पर केंद्रित है, यह भूगोल की कई उप-शाखाओं को सम्मिलित करता है। ये सामाजिक भूगोल, सांस्कृतिक भूगोल, आर्थिक भूगोल, राजनीतिक भूगोल, जनसंख्या भूगोल, आदि हैं। मानव भूगोल की मुख्य शाखाएँ नीचे दी गई हैं:

मानव भूगोल की शाखाएँ

भूगोल की इन प्रमुख शाखाओं के भीतर कई उप-शाखाएँ हैं। यह बड़ी संख्या में शाखाओं को शामिल करता है और इसलिए यह व्यापक और विविध है। इसमें आर्थिक भूगोल की विशेष शाखाएँ (संसाधन भूगोल, कृषि भूगोल, औद्योगिक भूगोल, व्यापार भूगोल, परिवहन और संचार, विपणन भूगोल, व्यवसाय/वाणिज्यिक भूगोल, क्षेत्रीय विकास और योजना, आदि) शामिल हैं, सामाजिक/सांस्कृतिक भूगोल (सामाजिक भूगोल, सांस्कृतिक भूगोल, लिंग भूगोल, आदि), राजनीतिक भूगोल, (भू-राजनीति, चुनावी भूगोल, संघीय (federalism) भूगोल, आदि), जनसंख्या और बस्ती भूगोल (जनसंख्या भूगोल, बस्ती भूगोल, शहरी भूगोल), चिकित्सा भूगोल/स्वास्थ्य भूगोल और मानवतावादी या आमूल परिवर्तनवादी भूगोल। इन उप-शाखाओं में से कई एक से अधिक शाखाओं के संयोजन से बने हैं जैसे क्षेत्रीय विकास और योजना आर्थिक भूगोल, सामाजिक और सांस्कृतिक भूगोल, जनसंख्या भूगोल और राजनीतिक भूगोल का मिश्रण है, जिसमें क्षेत्रीय/स्थानिक अध्ययन के सभी उपकरण और तकनीक जैसे सांख्यिकी और कार्टोग्राफिक/भू-स्थानिक तकनीक (रिमोट सेंसिग, जीआईएस ओर जीपीएस) शामिल हैं।

बोध प्रश्न 4

मानव भूगोल के क्षेत्र का उल्लेख कीजिए। मानव भूगोल की मुख्य शाखाएँ क्या हैं?

1.6 मानव भूगोल की प्रासंगिकता

मानव भूगोल समकालीन या वर्तमान समय में बहुत प्रासंगिक है। सूक्ष्म-विशेषज्ञता के बावजूद, यह वास्तविकता के विभिन्न क्षेत्रों का संश्लेषण करके वास्तविक जगत का समग्र अध्ययन करने की क्षमता रखने वाला एकमात्र विषय बना रहा। जगह-जगह पर मानव से जुड़ी वास्तविक दुनिया की समस्याओं में वृद्धि के कारण इसकी भूमिका और प्रासंगिकता बढ़ी है। समकालीन समाजों और उनकी विशेषताओं के स्थानिक पहलुओं के साथ शुरू कर सामाजिक समस्याएँ, आर्थिक विकास में क्षेत्रीय असमानताओं के विषय, क्षेत्रीय विकास योजना, जनसंख्या विस्फोट और खाद्य सुरक्षा, स्थानीय, क्षेत्रीय और वैश्विक संघर्ष, मानव समाज और सामाजिक संगठनों पर भूमण्डलीय तापवृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, स्वास्थ्य समस्याएँ, आदि के अध्ययन और समाधान के लिए मानव भूगोल के ज्ञान क्षेत्र की आवश्यकता होती है।

मानव की भौगोलिक विधियों और परिप्रेक्ष्य के उपयोग से कई समकालीन प्रश्नों या समस्याओं के उत्तर मिल सकते हैं। उदाहरण के लिए, भूमण्डलीय तापवृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) और जलवायु परिवर्तन के कारण किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है? ये समस्याएँ कहां स्थित हैं? इन्सान पर प्रभाव की प्रक्रिया क्या रही है और इसे कैसे कम या खत्म किया जा सकता है? इसी तरह, कुछ क्षेत्रों या पूरे विश्व में स्वास्थ्य समस्याएँ क्या हैं, ये समस्याएँ कहाँ पाई जाती हैं, ये समस्याएँ कैसे पैदा हुई हैं और इन समस्याओं से कैसे निपटा जा सकता है? इस प्रकार के अध्ययन मानव भूगोल में किए जाते हैं जिसमें उत्तर खोजने के लिए विभिन्न सम्बद्ध विषयों से सम्बन्धित सभी प्रासंगिक पहलुओं को शामिल किया जाता है। यह तेजी से बदलती दुनिया पर उभरते अध्ययनों के साथ ज्ञान की खोज में भी योगदान देता है।

इसलिए बढ़ी हुई समकालीन स्थानीय और वैश्विक समस्याओं और मुद्दों के समय में, समस्यायों के समाधान और ज्ञान की खोज के लिए योगदान में मानव भूगोल की अत्यधिक प्रासंगिकता है।

बोध प्रश्न 5

मानव भूगोल की समकालीन प्रासंगिकता क्या है?

1.7 सारांश

इस इकाई में आपने अध्ययन किया है:

- मानव भूगोल और इसकी परिभाषाओं के बारे में, जो कहता है कि यह बदलती पृथ्वी और पर्यावरण पर सक्रिय मानव और उनकी गतिविधियों का अध्ययन है।
- मानव भूगोल का विकास, जिसने ईसा से सदियों पहले से समकालीन समय तक का लम्बा सफर तय किया है।
- मानव भूगोल की प्रकृति और परिप्रेक्ष्य, जो संश्लेषण की महान क्षमता के साथ अंतर्विषयक और समग्र हैं।
- मानव भूगोल के क्षेत्र और शाखाएँ जो कई शाखाओं और उप-शाखाओं के साथ विशाल हैं।
- वर्तमान समय के सन्दर्भ में मानव भूगोल की प्रासंगिकता।

1.8 अंत में कुछ प्रश्न

1. मानव भूगोल क्या है?
2. समय के साथ मानव भूगोल कैसे विकसित हुआ है?
3. मानव भूगोल की प्रकृति और परिप्रेक्ष्य क्या हैं?
4. मानव भूगोल के क्षेत्र और शाखाएँ क्या हैं?
5. मानव भूगोल की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

1.9 उत्तर

बोध प्रश्न

1. मानव भूगोल, भूगोल के दो उप-विषयों में से एक है, जो बदलती पृथ्वी की सतह और उसके (भौतिक) वातावरण की पृष्ठभूमि में मानवीय गतिविधियों का अध्ययन करता है।
2. मानव भूगोल के विकास के तीन प्रमुख चरण हो सकते हैं- i) जगद्विवरण/सृष्टिवर्णन और खोज काल ii) आधुनिक काल और iii) उत्तर आधुनिक काल
3. मानव भूगोल की प्रकृति अंतर्विषयक है, जो विभिन्न अन्य विषयों से अपने विषय वस्तु को लेती है और सम्पूर्ण वास्तविकता के अध्ययन के लिए भौगोलिक रूपरेखा में एकीकृत करती है। इसका परिप्रेक्ष्य चीजों और परिघटनाओं को समग्र रूप से देखना और जाँचना है।
4. अध्ययन के लिए बड़ी संख्या में विषय वस्तु के साथ इसे व्यापक सम्भावना मिली है। मानव भूगोल की मुख्य शाखाएँ आर्थिक भूगोल, सामाजिक और सांस्कृतिक भूगोल, जनसंख्या और बस्ती भूगोल, राजनीतिक भूगोल, चिकित्सा/स्वास्थ्य भूगोल और मानवतावादी या कट्टरपंथी या आमूल परिवर्तनवादी भूगोल हैं।
5. तेजी से बदलती दुनिया में उभरते ज्ञान की खोज के लिए और विभिन्न जगहों से जुड़े मानवों से सम्बन्धित वास्तविक दुनिया की विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए भी मानव भूगोल की अत्यधिक प्रासंगिकता है।

अंत में कुछ प्रश्न

1. आप अपने उत्तर की शुरूआत मानव भूगोल को भूगोल के दो प्रमुख उप-विषयों में से एक के रूप में कर सकते हैं। इसके बाद इसे परिभाषित कीजिए और समझाइए कि मानव भूगोल क्या है। अनुभाग 1.1 और 1.2 देखिए।
2. विशेष रूप से जगद्विवरण/सृष्टिवर्णन और खोज काल, आधुनिक काल और आधुनिक काल के बाद के समय या उत्तर आधुनिक काल को ध्यान में रखते हुए मानव भूगोल के विकास पर चर्चा कीजिए। अनुभाग 1.3 का सन्दर्भ लीजिए।
3. मानव भूगोल की प्रकृति को अंतर्विषयक के रूप में, और मानव भूगोल के परिप्रेक्ष्य को वास्तविकता का समग्र अध्ययन करने के लिए संश्लेषण करने वाले विषय के रूप में समझाइए। अनुभाग 1.4 का सन्दर्भ लीजिए।

4. आप मानव भूगोल के क्षेत्र को पर्यावरण और भौतिक स्थितियों के सम्बन्ध में मानवीय क्रियाओं को फेनमैन के शुरुआती काम पर आधारित आरेख के माध्यम से लिख सकते हैं। तत्पश्चात् मानव भूगोल की प्रमुख शाखाओं के बारे में चर्चा कीजिए। अनुभाग 1.5 का सन्दर्भ लीजिए।

5. मानव भूगोल की प्रासंगिकता बढ़ी हुई स्थानीय और वैश्विक समस्याओं और सामाजिक समस्याओं, आर्थिक विकास में क्षेत्रीय असमानताओं के मुद्दे, क्षेत्रीय विकास योजना, जनसंख्या में विस्फोट और खाद्य सुरक्षा, स्थानीय, क्षेत्रीय और वैश्विक संघर्ष, भूमण्डलीय तापवृद्धि और जलवायु परिवर्तन का मानव समाज और सामाजिक संगठनों पर प्रभाव, स्वास्थ्य समस्या, आदि के परिप्रेक्ष्य में चर्चा कीजिए। समकालीन समय में समस्याओं का समाधान और ज्ञान अन्वेषण की दिशा में मानव भूगोल के योगदान की अपार प्रासंगिकता है। अनुभाग 1.6 देखिए।

1.10 सन्दर्भ और अन्य पाठ्य सामग्री

1. Gregory, D., Johnston, R., Pratt, G., Watts, M.J. and S. Whatmore (2009). *Dictionary of Human Geography,* Sussex: Willey-Blackwell.
2. R.J. Johnston, Sixty Years of Human Geography, *https://www.researchgate.net/publication/228464890-Sixty_years_of _ change_in_Human_Georgraphy*
3. Halt-Jensen, A. (2009). *Geography: History and Concepts: A Student's Guide,* London: Sage.
4. Hammond, C.W. (1979). *Elements of Human Geography, London:* Unwin Hyman.
5. Boyle, M. (2015). *Human Geography: A Concise Introduction,* Chisester: Wiley Blackwell
6. Hussain, M. (2007). *Evolution of Geographical Thought,* New Delhi: Rawat Publications
7. Dikshit, R. D. (2004). *Geographical Thought. A Critical History of Ideas,* New Delhi: Prentice-Hall of India.
8. Adhikari, S. (2015). *Fundamentals of Geographical Thought,* New Delhi: Orient Blackswan.
9. Rana, L. (2008). *Geographical Thought: A Systematic Record of Evolution,* New Delhi: Concept Publishing House.
10. Hussain, M. (2011). *Human Geography*, New Delhi: Rawat Publications.
11. Fenneman, N. M. (1919). *The Circumference of Geography, http://www.d.umn.edu/~okuhlke/Archive/GEOG%205803% 20Readings/ Week%206/circumference_geo.pdf*.